

भजन रचियता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

1. जय जय जय जिनवर
2. श्री जिनवर की दिव्य देशना
3. आओ नी आओ नी भविजन
4. आयो आयो पंचकल्याणक भविजन
5. नाथ तुम्हारे दर्शन से निज दर्शन
6. आया पंचकल्याणक महान
7. गर्भ कल्याणक की भुभ घड़ी
8. उड़ उड़ रे म्हारी ज्ञान चुनरिया
9. वाराणसी में गर्भकल्याणक
10. जागो जी माता जागन घड़ियों
11. बहती आनंद रस की धारा
12. माता थारी परणति
13. म्हारा पंच प्रभो नो मार्ग
14. माता वामा जायो प्यारा प्यारा ललना
15. म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल
16. वंदनवार सजाओ सखी आज अंगना
17. आनंद अंतर मां आज न समाय
18. जहाँ राग द्व' की गंध नहीं
19. आत्म अनुभव नित रमण करते सदा
20. ये महामहोत्सव मंगलमय सुहावना
21. धन्य घड़ी ये धन्य सुअवसर
22. मंगल ये अवसर आंगण आयो
23. धारा है दिगम्बर वेश
24. बनारस में बज रही बधइयां
25. आई आई देखो आई, नगरी में प्रतिष्ठा आई
26. तीर्थकर सुत जन्म लियो है, वामा माँ के अंगना
27. परम वीतरागी हे जिनदेव मेरे, हे जिनदेव मेरे
28. सुस्वागत है अहो भविजन, ये कल्याण सुहावना
29. गाजती बाजती आई प्रतिष्ठा आंगड
30. माता वामा ललना जायो, तीर्थकर सुत अंगना आयो ।
31. बाजत बधाई अश्वसेन की नगरियों
32. बहती आनंद की धार, भव्यों के मनहार
33. निज कल्याण के हेतु कल्याणक मंगलमय सुखकार रे ।

जय जय जय जिनवर हो..हो... जय जय जय जिनवर
कोरस - जय जय जय जिनवर हो..हो... जय जय जय जिनवर
अंतरदृष्टि तुम सम होवें... अंतरदृष्टि तुम सम होवें दो मुझको वह वर....
जय जय जय जिनवर हो.....

- विशद स्वच्छ दुति आप जिनेश्वर रागद्वेष मय मल से हीन ।
निर्मल दर्पण तुल्य स्वभावी, सुख दुःख समरस निज आधीन ॥
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर.... त्रिभुवन स्वामी प्रवर.....
- हे जिनन्द्र तुम सम दृष्टि धर, योगीजन निज को ध्याते ।
तुम प्रभाव से तज विभाव वे, तेरे ही सम हो जाते ॥
मोह अंधेरा हरने वाले....अविनाशी दिनकर.....
- केवल एक आपने प्रभुवर मार्ग मुक्ति का दिखलाया ।
औरों ने तो चारों गति में सदा भटकना सिखलाया ॥
अशरण लागा सारा जग अब.... आया तेरे दर.....
- कालदा' का रोना गाकर मैंने काल अनन्त गंवाया ।
निज वैभव पर दृष्टि न डाली, नश्वर वैभव पर ललचाया ॥
मार्ग दिखादो ऐसा प्रभुवर.... पाये मुक्ति घर.....

सूची

आत्म अनुभव नित रमण...आत्म अनुभव नित रमण करते सदा मुनिराज है ।
मुक्ति पथ अनुरागी गुरुवर सौख्य के साम्राज्य है ॥
आत्म अनुभव नित रमण...आत्म अनुभव नित रमण करते सदा मुनिराज है ।
मुक्ति पथ अनुरागी गुरुवर सौख्य के साम्राज्य है ॥

सौम्य मुद्रा भांत छवि नित दे कह रही उपदेश यह ।
सौम्य मुद्रा भांत छवि नित दे कह रही उपदेश यह
देख निज की ओर क्षण भर सौख्य का सागर बहे ॥
सहज ज्ञायक भाववर्ती साम्य रस की धार है.....
आत्म अनुभव नित रमण...आत्म अनुभव नित रमण करते सदा मुनिराज है ।
मुक्ति पथ अनुरागी गुरुवर सौख्य के साम्राज्य है ॥...लेडीज

दृष्टि में ध्रुव एक ज्ञायक आत्म अनुभव लीन है । लेडीज
दृष्टि में ध्रुव एक ज्ञायक आत्म अनुभव लीन है ।
विशय चाह से रहित मुनिवर, परम सुख स्वाधीन है ॥
चलते-फिरते सिद्ध प्रभु को वंदना भात बार है.....
आत्म अनुभव नित रमण...आत्म अनुभव नित रमण करते सदा मुनिराज है ।
मुक्ति पथ अनुरागी गुरुवर सौख्य के साम्राज्य है ॥...जेंटस

राग का न लेश जिनके धारे न कोई वेश है । ...जेंटस
राग का न लेश जिनके धारे न कोई वेश है ।
रत्नत्रय भूषण से भोभित एक मुनि का भ" है ॥
स्वानुभव के गिरि शिखर से बह रही सुखधार है.....
आत्म अनुभव नित रमण...आत्म अनुभव नित रमण करते सदा मुनिराज है ।
मुक्ति पथ अनुरागी गुरुवर सौख्य के साम्राज्य है ॥...महिला

सूची

रचियता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

धारा है दिगम्बर वेश ...हो ओ...धारा है दिगम्बर वेश
किया मुक्ति श्री में प्रवेश... वो मुनिवर चल पड़े.....
धारा है दिगम्बर वेश... किया मुक्ति श्री में प्रवेश... वो मुनिवर चल पड़े.....
धारा है दिगम्बर वेश... किया मुक्ति श्री में प्रवेश... वो मुनिवर चल पड़े.....
वो मुनिवर चल पड़े.....
नहीं राग तंतु कुछ शेष, परिग्रह अरु राग न द्वेष.. वो मुनिवर चल पड़े.....

सब राज्य पाठ त्यागा.... समता धन के स्वामी ।
चक्री झुकते पग में, वंदन अंतर यामी ॥
बहती उपशम रस धार, त्यागा सुत तिय परिवार ।
वो मुनिवर चल पड़े..... वो मुनिवर चल पड़े.....

दिन रात आत्म चिंतन.... समभावमयी जीवन ।
निर्ग्रन्थ दशा कहती कितना पावन है मन ॥
देता जीवन संदेश, सुख अंदर बाहर क्लेश ।
वो मुनिवर चल पड़े..... वो मुनिवर चल पड़े.....

हे भाश्वत् सुख भोगी.... भुद्धात्म विलासी हो ।
वैराग्यमयी जीवन, निज भाव प्रकाशी हो ॥
भव भोग से वैरागी, व्रत धारी बड़भागी ।
वो मुनिवर चल पड़े..... वो मुनिवर चल पड़े.....

विशयों की आश न मन.... परिग्रह का लेश नहीं ।
तप ज्ञान ध्यान जल से परणति है नित भीगी ॥
धनि वनवासी मुनिराज, मुक्ति रमणी सिरताज ।
वो मुनिवर चल पड़े..... वो मुनिवर चल पड़े.....

सूची

रचयिता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

श्री जिनवर की दिव्य देशना..... श्री जिनवर की दिव्य देशना फैला रहा जहान में ।
मंगलमयी जिनशासन ध्वज ये लहराता है भान से ॥
मंगलमयी जिनशासन ध्वज ये लहराता है भान से ॥
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में.....
मंगलमयी जिनशासन ध्वज ये लहराता है भान से ॥

अनेकांत की वस्तु व्यवस्था का घोटक जग में न्यारा ।
स्याद्वाद चिन्हों से अंकित केशरिया, ध्वज अति प्यारा ॥
मुक्ति मार्ग का दिग्दर्शक ये भव्य कहें बहुमान से.....
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में.....

रत्नत्रय के पावन नभ पर फहराता है मन भावन ।
सिद्धालय की ओर बढे जो उनकी परिणति हो पावन ॥
पाये भविजन भव का किनारा मिला मुक्ति सोपान है.....
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में.....

नव देवों में एक जिनालय जिसकी भोभा का नायक ।
मोह तिमिर क्षय करने वाला भाश्वत सुख का परिचायक ॥
भेदज्ञान का दीप जला अब फैला सम्यग्ज्ञान है
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में.....

जिनशासन की गौरव गाथा का यह बोध कराता है ।
निर्ग्रन्थों का अनुगामी ही महा मोक्ष पद पाता है ॥
मैं स्वभाव से सिद्ध स्वरूपी जागा निज सम्मान रे.....
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में.....

सीमंधर संदेश सुनाने कुन्दकुन्द मुनिवर आये ।
धन्य धन्य गुरुवर कहान निज ज्ञायक परिचय करवाये ॥
अध्यात्म भवन के ज्ञान शिखर पर फहरा रहा है भान से.....
लहराता लहरायेगा लहरा रहा जहान में

सूची

रचियता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

आया पंचकल्याणक महान आया पंचकल्याणक महान ।
कोरस --आया पंचकल्याणक महान आया पंचकल्याणक महान ।
जन्म मरण दुख क्षय कर हम भी.....
जन्म मरण दुख क्षय कर हम भी..... पायें पद निर्वाण ॥

जग तारक प्रभु तीर्थेश्वर का अंतिम जन्म महा सुखमय ।
स्वयं तिरे प्रभु भवसागर से हमकों तारो यही विनय ॥
ज्ञान दिवाकर उदित हुआ अब पाओ सम्यग्ज्ञान
आया पंचकल्याणक महान आया पंचकल्याणक महान ।

निरख निरख छवि बाल प्रभु की सुरपति आनंद उर भारी ।
रूप अनुपम प्रभु बालक का लख भाचि लेती बलिहारी ॥
हिल मिल नृत्य करें सब भविजन गावें मंगल गान
आया पंचकल्याणक महान आया पंचकल्याणक महान ।

गुण अनंत के धारी प्रभुवर अंतर परणति क्या कहना ।
तीन ज्ञान संग ले जन्मे प्रभु पहने रत्नत्रय गहना ॥
धन्य धन्य है भाग्य हमारे मिला मुक्ति वरदान
आया पंचकल्याणक महान आया पंचकल्याणक महान ।

ज्यों पारस से संस्पर्शित हो लोह स्वयं पारस होता ।
त्यों जिनवर के दर्श मात्र से मोह अंधेरा क्षय होता ।
आप कृपा से जागे वह बल मैं भी बनूं भगवान.....
आया पंचकल्याणक महान आया पंचकल्याणक महान ।

सूची

रचयिता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

बहती आनंद रस की धारा माता अंतर में ।
कोरस... बहती आनंद रस की धारा माता अंतर में....
बहती आनंद रस की धारा माता अंतर में,
कोरस... बहती आनंद रस की धारा माता अंतर में....

गर्भ क्या माँ का ये तो मंगल जिनालय ।
सिद्ध पुरी के स्वामी का ये आलय ॥
मानो मुक्ति गर्भ में आई हो ५५ माता के उर में

धन्य है त्रिभुवन माता भोभा है न्यारी ।
भाचि इन्द्राणी माँ की लेत बलिहारी ॥
लिया चिंतामणी अवतार हो ५५ लिया चिंतामणी अवतार माता के उर में

न्हवन कराओं माँ का आज सखी प्यारी ।
झलके है चैतन्य दर्पण मात छवि प्यारी ।
चमकें रत्नत्रय का हार... हो ५५ चमकें रत्नत्रय का हार माता के उर में

दशदिश छाये खुशियाँ बाजे भाहनाई ।
जन्म महोत्सव की भुभ घड़ी आई ॥
जन्मी चेतन परणति आज हो ५५ जन्मी चेतन परणति आज माता के उर में

सूची

रचयिता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

उड़ उड़ रे उड़ उड़ रे उड़ उड़ रे उड़ उड़ रे
उड़ उड़ रे म्हारी ज्ञान चुनरियोँ
तारणहारा प्रभुजी घर आवे, तारणहारा प्रभुजी घर आवे रे आवे
तारणधरा प्रभु जी घर आवे
कोरस : उड़ उड़ रे म्हारी ज्ञान चुनरियोँ, तारणहारा प्रभुजी घर आवे
तारणहारा प्रभुजी घर आवे

स्वर्ग पुरी से प्रभु जी पधारे हो s s.. जग को मुक्ति मार्ग बताये ।
कण कण में...कण कण में छाई है खुशियाली ॥
तारणहारा प्रभुजी घर आवे रे आवे तारणहारा प्रभुजी घर आवे
कोरस : उड़ उड़ रे म्हारी ज्ञान चुनरियोँ, तारणहारा प्रभुजी घर आवे
तारणहारा प्रभुजी घर आवे

समकित सुगंधी दश दिश महके हो s s.. चैतन्य परणति पंछी चहके ।
दुल्हन सी... दुल्हन सजी नगरी प्यारी ॥
तारणहारा प्रभुजी घर आवे रे आवे तारणहारा प्रभुजी घर आवे
कोरस : उड़ उड़ रे म्हारी ज्ञान चुनरियोँ, तारणहारा प्रभुजी घर आवे
तारणहारा प्रभुजी घर आवे

त्रिभुवनपति की भोभा न्यारी हो s s.. अंतरपरणति निजरस पागी ।
मुक्ति का... मुक्ति का मार्ग पाये नर नारी ॥
तारणहारा प्रभुजी घर आवे रे आवे तारणहारा प्रभुजी घर आवे
कोरस : उड़ उड़ रे म्हारी ज्ञान चुनरियोँ, तारणहारा प्रभुजी घर आवे
तारणहारा प्रभुजी घर आवे

सूची

रचयिता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

वाराणसी में गर्भ कल्याणक हर्ष छा गया,
नाचो सारे झूमो सारे, तीन लोक का नाथ आ गया

१. घोलो केसर रंग गुलालजी.....२
गाओ सब मिल मंगलाचारजी.....२
कर्म भूमि में कल्प तरु मानो आज आ गया
नाचो सारे.....वाराणसी में.....

२. जाने अपना, ज्ञान स्वभाव जा....२
माने निज को, ज्ञायक भाव जो....२
भव्य जनों के पुण्यफलों का काल आ गया
नाचो सारे.....वाराणसी में.....

१० आलाप : हे.....हे.....हे जी रे.....
छाई खुशहाली नगरी में आज
वाराणसी में मंगल प्रभात हो जी रे.....

३. इंद्र-इंद्राणी सब मिल आये
उत्सव मनाये आज रे, आया जन्म कल्याण आज रे
झूम रही हैं, धरती सारी झूम रहा आकाश रे, आया जन्म...

४. चलो सब मिल, चलो वाराणसी.....२
जाने फिर कब आयें ये अवसर....२
जन्म मरण के क्षय करने का स्वकाल आ गया
नाचो सारे..... वाराणसी में.....

सूची

बनारस में बज रही बधइयां, बनारस में बज रही रे ओ.....हो.....हो
यहां जन्में हैं पारस ललना, यहां जन्में है देखो पारस ललना.....

१. तीन-तीन ज्ञान धारी ललना, तीन-तीन ज्ञान धारी हो...ओ....हो
इन्द्र कुबेर स्वर्गपुरी में करते हैं रत्नों की वर्षा
बनारस में बज रही बधइयां, यहां जन्में हैं पारस ललना,
यहां जन्में है देखो पारस ललना.....२

२. छप्पन कुमारियां आई, अष्ट देवियां ओ....हो.....हो
रात दिना करें मां की सेवा, वामा माता की सेवा
बनारस में बज रही बधइयां, यहां जन्में हैं पारस ललना,
यहां जन्में है देखो पारस ललना.....२

३. अन्तिम जन्म धारी ललना, अन्तिम जन्म धारी हो...ओ....हो
गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक, देव मनाएं मोक्ष कल्याणक
बनारस में बज रही बधइयां, यहां जन्में हैं पारस ललना,
यहां जन्में है देखो पारस ललना.....

सूची

आई आई देखो आई, नगरी में प्रतिष्ठा आई
तीर्थकर जन्म की घड़ी रे, हर्ष की घड़ी ये आ गई रे

त्रिभुवन के नाथ आएँ, सुर नर गुणगान गाएँ
रत्नों और पुशों की झड़ी रे, हर्ष, हर्ष की घड़ी रे
आई - आई

अद्भुत है, लाल माई, नरको में भांती हाई
तीर्थकर जन्म की घड़ी रे, धन्य धन्य ये घड़ी रे
आई - आई

तेजवान ज्ञानवान, जिनशिशु हैं, पुण्य वान
महिमा महान बाल की है, तीर्थकर सुतबाल की रे
आई - आई

दैवीय बाद्ध बजें, इंद्र भाची नृत्य करें
तीर्थकर जन्म की घड़ी रे, हो रही प्रभावना बड़ी रे
आई - आई

सूची

तीर्थकर सुत जन्म लियो है, वामा माँ के अंगना

तीर्थकर सुत जन्म लियो है, वामा माँ के अंगना
हो आज जन्म लियो ललना जन्मलियो आज जन्म लियो ललना
रून-झुन, रून-झुन, रून-झुन, रून-झुन बाजे पैजनिया
बधाई वामा मैयाए बधाई हो, बधाई वामा मैया

ज्ञानवान है जो तेजवान है, जो अनंत गुणों की खान है
तीनों लोकों में उपमा नहीं है, तेरी गोदी में माँ भगवान है
महापुण्यशाली ललना है, वामा माँ के अंगना
हो आज जन्म लियो.....

सौधर्म भाची सब आए, बाल प्रभु को निरख हरशाये
अरी नेत्र सहस्र बनाएँ, संतुष्ट नहीं हो पाएँ
नारकियों को मिली भांती है, अद्भुत माँ का ललना
हो आज जन्म लियो

चैतन्य शिखर है, शिशु जिन, सारी धरती थी व्याकुल प्रभु बिन
जिन भासन की होगी प्रभावना, आज पूरी हुई है भावना
भुञ्ज ज्योत्सना फैल रही है, धनि-धनि जिनवर ललना
हो आज जन्म लियो

सूची

परम वीतरागी हे जिनदेव मेरे, हे जिनदेव मेरे
हे जिननाथ मेरे, परमवीतरागी

अहो भांत मुद्रा जिनेश्वर तुम्हारी, अनुपमेय, नासाग्र दृष्टि के धारी ।
अहो नाथ वाणी है कल्याणकारी, महा सौख्यकारी महा सौख्यकारी ॥
परम वीतरागी.....

तुम्ही ब्रम्हा, विश्णु महेश्वर तुम्ही हो, कैवल्यधारी हितकर तुम्ही हो ।
निजानंद भोगी अर्हन् तुम्ही हो, सुखकर तुम्ही हो सुखकर तुम्ही हो ॥
परम वीतरागी.....

अहो द्रव्य दृष्टि से मैं भी तुम्ही सम, प्रभुतामई पूरा परमात्म ।
तुम्हारी ही वाणी से जाना हे भगवन्, श्री देव अर्हन् श्री देव अर्हन् ॥
परम वीतरागी.....

[सूची](#)

जागो जी माता जागन घड़ियों आई -२
उदयाचल से भानू जागा, नव किरणें उमगाई -२
जागो जी माता जागन घड़ियों आई -२

सृष्टि का श्रृंगार मनोरम गाते पंक्षी मधुरिम - मधुरिम -२
प्रात लालिमा छाई
जागो जी माता जागन घड़ियों आई -२

सुरबालायें मिलकें उठायें, मधुरिम स्वर में गीत सुनायें - २
तज दो भायन वामा माई
जागो जी माता जागन घड़ियों आई -२

सुखकारिणी - हितकारिणी माता, रत्न कुक्षी धारिणी जगमाता - २
नारी में श्रेष्ठ कहाई
जागो जी माता जागन घड़ियों आई -२

सूची

सुस्वागत है अहो भविजन, ये कल्याण सुहावना

सुस्वागत है अहो भविजन, ये कल्याण सुहावना ।
अहो निर्दोश जिन भासन, करो इसकी प्रभावना ॥
सुस्वागत है अहो भविजन

वंदन है कोटि वंदन हे पारसजिन हमारा ।
घड़ियों ये आगमन की, हर्षित त्रैलोक्य सारा ॥
हर्षित त्रैलोक्य सारा.....
ये गर्भोत्सव शिशुजिन का मनाएंगे सुभावना ।
सुस्वागत है अहो.... अहो निर्दोश जिनशासन

जन्मेंगे नाथ जिस क्षण, त्रैलोक्य भांति पायें ।
नरकों में भी घड़ी भर, सुख भांति जीव पायें ॥
ये जन्मोत्सव आदीश्वर, है सुखकारी सुहावना ।
सुस्वागत है अहो.... अहो निर्दोश जिन भासन

वैराग्य काल आया, संसार ना सुहाया ।
ज्ञायक ही मन को भाया, ज्ञायक ही मन को भाया ॥
अहो दीक्षा का अवसर, निकट आया मन भावना ।
सुस्वागत है अहो..... अहो निर्दोश जिन भासन

नाशे जो घातिया जिन, प्रगटे चतुष्ट पावन ।
कैवल्य की कला में, जाने त्रैलोक्य भगवन ॥
अहो केवल ज्ञानी जिन, श्री अर्हन् परमात्मा ।
सुस्वागत है अहो..... अहो निर्दोश जिन भासन

नाशे अघातिया रिपु, लोकाग्र में विराजे ।
निश्कर्म अशरीरी, आदर्श है हमारें ॥
सुस्वागत है अहो.... अहो निर्दोश जिन भासन.....

सूची

गर्भ कल्याणक की शुभ घड़ी आई, बधाई हो बधाई वामा माता बधाई.....

सोलह सपने अद्भुत देखे, उनके फल राजा से पूछे ।
रानी तेरे गर्भ से सुन्दर पुत्र होगा, तीन लोक का नाथ बनेगा ॥
स्वप्न फलों को सुन माता हर्षाई.....
बधाई हो बधाई..... गर्भकल्याणक की बधाई हो

सुरपति की आज्ञा से वाराणसी, स्वर्गपुरी सी सजी हुई ।
रत्नों की वर्षा से धरती, वाराणसी की भरी हुई ।
स्वयं कुबेरजी ने नगरी सजाई
बधाई हो बधाई..... गर्भकल्याणक की बधाई हो

सुरबालायें स्वर्ग से आई, देवीय वस्त्राभूषण लाई ।
रत्नकुक्षी धारिणी वामा माता की, सेवा कर के तृप्ति पाई ॥
तत्व चर्चा कर भांका मिटाई
बधाई हो बधाई..... गर्भकल्याणक की बधाई हो

सूची

म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी
मंगल घड़ी आई पावन घड़ी हो.... मंगल घड़ी आई पावन घड़ी हो
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी.....

वामादेवी माता जी ललना जायो, तीर्थेश्वर सुत अश्वसेन पायो ।
दुल्हन सी आज लागे देखो वाराणसी - २
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी

अंतिम जन्म लिया प्रभु तुमने... अंतिम जन्म लिया प्रभु तुमने लिया प्रभु तुमने ।
स्वानुभूति रमणी का वरने, फिर नरकों में पल भर देखों भांति पड़ी ॥
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी

सुरपति ऐरावत ले आये - सुरपति ऐरावत ले आये ।
भाचि इन्द्राणी मंगल गाये, कलशा सजा ले आये क्षीर नीर भरी ॥
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी

रत्नमयी पलने में झूले - रत्नमयी पलने में झूले ..पलने में झूले देखो पलने में झूले ।
निज वैभव के रत्न न भूले, तीर्थेश्वर नाथ महिमा तुम्हरी जग में बड़ी ।?
म्हारे आंगन आज आई देखो मंगल घड़ी

सूची

रचयिता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

आनंद अंतर में आज न समायें आनंद अंतर में आज न समायें
जन्मे पारस कुमार खुला मुक्ति का द्वार, तिहुलोक में आनंद छाये ॥
आनंद अंतर में आज न समायें

स्वर्गपुरी से देवगति तज प्रभु ने नरतन पायों ।
धन्य वामादेवी माता, तीर्थकर सुत जायों ॥ - २
इन्द्र नगरी में आयें मंगल उत्सव रचायें - (२कोरस)
सारी धरती दुल्हन सी सजी जायें
आनंद अंतर में आज न समायें

सोलह सपने मां ने देखे, मन में अचरज भारी ।
अश्वसेन से फल जब पूछा, उपजा आनंद भारी ॥ - २
तीन लोकों का नाथ तेरे गर्भ में मात - २ (कोरस)
अनुभूति में दर्शन पायें
आनंद अंतर में आज न समायें

अंतिम जन्म लिया प्रभु तुमने सुरपति द्वारे आये ।
नेत्र हजार निहारे प्रतिक्षण, तृप्त नहीं हो पाये ॥ - २
गीत सुरबाला गाये भाचि चौक पुरायें - २ (कोरस)
नरकों में भांति छायें
आनंद अंतर में आज न समायें

भव्यजनों के इष्ट जिनेश्वर, अंतिम भव को धारे ।
स्वयं तिरे भव सागर से और हमको पार उतारे ॥ - २
सब मिलकर के आये, प्रभु दर्शन को पाये - २ (कोरस)
प्रभुता अपनी पा जायें
आनंद अंतर में आज न समायें

सूची

रचयिता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा

आयो आयो पंचकल्याणक भविजन आ जाओ... आ जाओ
खुला है आज मुक्ति का द्वार भविजन आ जाओ आ जाओ
आयो पंचकल्याणक आज भविजन आ जाओ... आ जाओ
आनंद है उत्सव.... आ जाओ
ये महा महोत्सव आ जाओ
आओ रे पधारो सिद्धक्षेत्र मंगल यह उत्सव आया यहाँ ।
(कोरस) आयो आयो पंचकल्याणक भविजन आ जाओ आ जाओ सिंगल
(कोरस) खुला है आज मुक्ति का द्वार भविजन आ जाओ आ जाओ सिंगल
आयो आयो पंचकल्याणक भविजन आ जाओ... आ जाओ
खुला है आज मुक्ति का द्वार भविजन आ जाओ

क्षेत्र शिखरजी सिद्धधरा का कण कण है अति पावन ।
नगर बनारस आज बन गया भरत क्षेत्र का मधुवन ॥
बहे आनंद रस की धार भविजन आ जाओ ... आ जाओ ...२
आनंद है उत्सव

भव्यों का सौभाग्य खिला है जिनदर्शन सब पायें ।
सिद्धक्षेत्र में आकर हम सब सिद्धों से मिल जावें ॥
लागा सिद्धों का दरबार भविजन आ जाओ..... आ जाओ २
आनंद है उत्सव.....

रत्नत्रय उर धार स्वयं प्रभु, भाश्वत शिवपद पायें ।
भवोदधि में हम थे अटके हमको पार लगावों ॥
चलो भवसागर के पार भविजन आ जाओ.....आ जाओ.....२
आनंद है उत्सव.....

सिद्धों को मंगल आमंत्रण सिद्धालय से आया ।
अब जो जागें निज हित लागें सिद्धों ने बुलवाया ॥
पाने सिद्धगति सुखकार भविजन आ जाओ.....आ जाओ २
आनंद है उत्सव.....

सूची

माता थारी परणति तत्वमयी..... माता थारी परणति तत्वमयी,
पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां.....
पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां.....
कोरस :....माता थारी परणति तत्वमयी.....
माता थारी परणति तत्वमयी.....
पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां.....
पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां.....
माता थारी परणति तत्वमयी.....

समय नु सार आतम समय नु सार आतम.. माता मन भावें....
राग से भिन्न ज्ञायक मात बतलावें ।।
पायी तृप्ति अंतर मां अविकार माता संग चर्चा मां.....
पायी तृप्ति अंतर मां अविकार माता संग चर्चा मां.....
माता थारी परणति तत्वमयी..... माता थारी परणति तत्वमयी.....
पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां.....पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां....
माता थारी परणति तत्वमयी.....

भुद्ध स्वरूपी ज्ञायक.....भुद्ध स्वरूपी ज्ञायक.... सहज अनूपा ।
अरूपी अमूर्तिक सदा आनंदरूपा ।।
जाना निज स्वरूप सुखकार माता संग चर्चा मां.....
जाना निज स्वरूप सुखकार माता संग चर्चा मां.....
माता थारी परणति तत्वमयी..... माता थारी परणति तत्वमयी.....
पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां.....पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां....
माता थारी परणति तत्वमयी.....

जो न करे कर्म....जो न करे कर्म नोकर्म परिणाम ।
मात्र जाने न करें ज्ञानी आतमराम ।।
पायों दिव्यध्वनि नों सार माता संग चर्चा मां
पायों दिव्यध्वनि नों सार माता संग चर्चा मां
माता थारी परणति तत्वमयी..... माता थारी परणति तत्वमयी.....
पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां.....पायों जिनवचनों ना सार माता संग चर्चा मां....
माता थारी परणति तत्वमयी.....

[सूची](#)

आओ नी आओ नी भविजन आओ नी आओ नी भविजन
सिद्धक्षेत्र के तले, सिद्धप्रभु से मिलें निज अनुभव रस पान करें ।
आओ नी आओनी भगवन्

मधुवन की पावन वसुधा से....२
मंगल आमंत्रण आया २
सिद्धों के संग मिल जाने को....२ भव्यों को है बुलवाया ...२
अष्टकर्म के बंधन छूटे...२ भव भव से
निज अनुभव रस पान करें

मंगलकारी प्रभुकल्याणक २
भव्यों के कल्याण स्वरूप.....२
जिन दर्शन है उनका सच्चा ...२ प्रभु सम जो देखे निज रूप ...२
चिरभावी तब मोह पलाय...२ पल भर में
निज अनुभव रस पान करें

यदि दुख से परिमुक्ति चाहो....२
तो श्रामण्य स्वीकार करें २
इन्द्रिय सुख तो सदा दुखमय...२ अब इनका परिहार करो २
भव सागर से पार चलो अब...२ क्षण भर में
निज अनुभव रस पान करें.....

सूची

धन्य घड़ी वह धन्य सुअवसर प्रभु ने पाया पद निर्वाण ।
धन्य घड़ी वह धन्य सुअवसर प्रभु ने पाया पद निर्वाण.....

मोहारि रिपु जयकर प्रभुजी.....मोहारि रिपु जयकर प्रभुजी ।
सिद्धालय जा गये विराज ।
धन्य घड़ी वह धन्य सुअवसर.....

अनुपमेय अविकारी निश्चल.....अनुपमेय अविकारी निश्चल ।
तत्क्षण पाया निज पद राज ॥
धन्य घड़ी वह धन्य सुअवसर.....

परम सूक्ष्म सिद्धात्म स्वरूपी..... परम सूक्ष्म सिद्धात्म स्वरूपी ।
नित्य निरामय आनंद रूप ॥
धन्य घड़ी वह धन्य सुअवसर.....

त्रिभुवन चूड़ामणि नित भोभित.....त्रिभुवन चूड़ामणि नित भोभित ।
अशरीर निश्काम अनूप ॥
धन्य घड़ी वह धन्य सुअवसर.....

हुये जगत आराध्य स्वयं भू.....हुये जगत आराध्य स्वयं भू ।
निज स्वभाव आराधन कर ॥
धन्य घड़ी वह धन्य सुअवसर.....

वंदनीय हो गये स्वयं प्रभु वंदनीय हो गये स्वयं प्रभु ।
निज ध्रुव ज्ञायक वंदन कर ॥
धन्य घड़ी वह धन्य सुअवसर.....

सूची

वंदनवार...वंदनवार सजाओ सखी आज अंगना ।
वंदनवार सजाओ सखी आज अंगना ॥
आज अंगना जन्में पारस ललना ।
आज अंगना जन्में पारस ललना ॥.....

स्वर्ग सी प्यारी लागे सारी नगरियों ।
जन्म महोत्सव की बाजत बधैया ॥
आनंद की धार बहें आज अंगना हो...हो आनंद की धार बहें आज अंगना
वंदनवार सजाओ सखी आज अंगना.....

समकित के सूत्र गूथों ज्ञान के पुष्प ।
दर्शन से सजा हृदय चारित्र अनूप ॥
हर्ष से झूमे भव्यों की भावना हो....हो हर्ष से झूमे भव्यों की भावना
वंदनवार सजाओ सखी आज अंगना.....

कल्पतरु में लागे पुष्प मनोहर ।
हर्षित है नर नारी अवसर ये सुखकर ।
इन्द्राणी नृत्य करें बाजे कंगना हो हो इन्द्राणी नृत्य करें बाजे कंगना
वंदनवार सजाओ सखी आज अंगना.....

सूची

जहाँ राग द्व” की गंध नहीं बस सुख अनुपम ही मिले ।
मुक्ति है नगर सिद्धों का है घर चलो सिद्धों की छांव की तले ॥
जहाँ राग द्व” की गंध नहीं बस सुख अनुपम ही मिले ।
मुक्ति है नगर सिद्धों का है घर चलो सिद्धों की छांव की तले ॥
चलो सिद्धों की छांव की तले.....

गुण रूपी जहाँ चमके तारे, और चांद हो समकित का ।
अंतर वीणा प्रतिक्षण गाती, आतम के गीत सदा ॥
अंतर वीणा प्रतिक्षण गाती, आतम के गीत सदा ॥
चैतन्यमयी इस उपवन में हम मुक्ति वधू से मिलें
मुक्ति है नगर सिद्धों का है घर चलो सिद्धों की छांव की तले ॥
चलो सिद्धों की छांव की तले.....

जहाँ सुख स्वरूपी अंबर पर उड़ती है ज्ञान पंतग ।
ध्रुव दृष्टि से डोर से बंधी हुई अविचल स्थित है उत्तंग ॥
ध्रुव दृष्टि से डोर से बंधी हुई अविचल स्थित ह उत्तंग ॥
ये देख नजारे अनुपम से भविजन मन कमल खिले
मुक्ति है नगर सिद्धों का है घर चलो सिद्धों की छांव की तले ॥
चलो सिद्धों की छांव की तले.....

जहाँ राग द्व” की गंध नहीं बस सुख अनुपम ही मिले ।
मुक्ति है नगर सिद्धों का है घर चलो सिद्धों की छांव की तले ॥
चलो सिद्धों की छांव की तले.....चलो सिद्धों की छांव की तले.....
चलो सिद्धों की छांव की तले..... चलो सिद्धों की छांव की तले.....

सूची

नाथ तुम्हारे दर्शन से निज दर्शन से निज दर्शन मैंने पाया ।
तुम जैसी प्रभुता निज में लख, चित मेरा हर्षाया ॥.....कोरस
नाथ तुम्हारे दर्शन से निज दर्शन से निज दर्शन मैंने पाया ।
तुम जैसी प्रभुता निज में लख, चित मेरा हर्षाया ॥.....कोरस

तुम बिन जाने निज से च्युत हो भववन में भटका हूँ ।
निज का वैभव निज में भाश्वत अब मैं समझ सका हूँ ॥
निज प्रभुता में मगन होऊ में होऊ निज की माया ॥
तुम जैसी प्रभुता निज में लख

पर्यय में पामरता तब भी द्रव्य सुखमयी राजे ।
लक्ष्य तजूं पर्यायों का निज भाव लखूं सुखकाजे ॥
पर्यायों में भटक भटककर मैं बहूँ दुख उठाया ॥
तुम जैसी प्रभुता निज में लख

पद्मासन थिर मुद्रा थिरता का ये पाठ पठाती ।
निजमय भाव लखे ते सुख है, नासादृष्टि सिखलाती ॥
पर पर करने कर्ता रहित, सुखमय शिवपंथ सुहाया ॥
तुम जैसी प्रभुता निज में लख

यही भावना अब तो भगवन निज में ही रम जाऊँ ।
आदि व्याधि उपाधि रहित मैं परम समाधि पाऊँ ॥
ज्ञानानंद ध्रुव स्वभाव ही अब मेरे मन भाया ॥
तुम जैसी प्रभुता निज में लख

नाथ तुम्हारे दर्शन से निज दर्शन से निज दर्शन मैंने पाया ।
तुम जैसी प्रभुता निज में लख, चित मेरा हर्षाया ॥.....कोरस में
नाथ तुम्हारे दर्शन से निज दर्शन से निज दर्शन मैंने पाया ।
तुम जैसी प्रभुता निज में लख, चित मेरा हर्षाया ॥.....कोरस में

[सूची](#)

म्हारा पंचप्रभु भगवान सुहावनो रे म्हारा पंचप्रभु
थारी वीतराग जिनमुद्रा मन भावनो रे..... थारी वीतराग जिन
म्हारा पंचप्रभु भगवान सुहावनो रे (कोरस)
म्हारा पंचप्रभु भगवान सुहावनो रे (कोरस)

म्हारा अरिहंत प्रभुवर प्यारा, जग को मुक्ति मार्ग दिखलावें ।... २
प्रभु की सौम्य छवि मनभावन, हम को वस्तुस्वरूप दिखावें ॥...२
प्रभु ने रत्नत्रय प्रगटायो... सुखकारनों रे.....प्रभु ने..

सर्वकर्मों से विरहित प्रभुवर भाश्वत सिद्ध परमपद पायो ।..... २
अविनाशी अविचल सुखरूपी, भव्यों के आदर्श सदा हो ॥..... २
भोगें सुख अनंतानंत आनंदकारनो रे भोगें सुख... ओम....ओम....ओम....

साधु संघ के अनुशासक आचारज विज्ञानी ध्यानी ।
निर्मल आचारज के धारी जो मुनिवर पथ के है अनुगामी ॥
पंचाचार धारी मुनिवर... हितकारनों रे पंचाचार धारीकृ

श्रुत आगम के बहु अभ्यासी, स्वयं पढ़ें है और पढ़ावें ।
ज्ञानादिक स्वभाव आराधक, ध्रुव ज्ञायक के गीत सुनावें ॥
विशयों की न चाह जिनके मंगलकारनों रे विशयों की... ओम....ओम....ओम....

मुनिवर सकलव्रती बडभागी, भव भोगों से सदा विरागी ।
चलते फिरते सिद्धों सम मुनि परणति अनुभव रस नित पागी ॥
बहती उपशम रस की धारा... सुखकारनों रे ...बहती उपशम

म्हारा पंचप्रभु भगवान सुहावनो रे म्हारा पंचप्रभु
थारी वीतराग जिनमुद्रा मन भावनो रे..... थारी वीतराग जिन
म्हारा पंचप्रभु भगवान सुहावनो रे
म्हारा पंचप्रभु भगवान सुहावनो रे

सूची

माता वामा....माता वामा जायो प्यारा प्यारा ललना ।
अंतिम भवधारी झूले पलना
माता वामा....माता वामा जायो प्यारा प्यारा ललना ।
अंतिम भवधारी झूले पलना
झूले पलना देखो पारस ललना, झूले पलना देखो पारस ललना ।
तीन तीन ज्ञानधारी भोभे ललना, परणति प्रभुवर की क्या कहना ॥
माता वामा जायो प्यारा प्यारा ललना, अंतिम

दश दिश फैली खुशियों बाजे भाहनाई रे, अश्वसेन नृप द्वार, बाजत बधाई रे ।
दश दिश फैली खुशियों बाजे भाहनाई रे, अश्वसेन नृप द्वार, बाजत बधाई रे ।
हिल मिल..हिल मिल नृत्य करें सारी सखियां ।
जन्म महोत्सव की भुभ घड़ियों ॥

सुरपति उत्सव कीना अद्भुत नजारा है, त्रिभुवन की भोभा न्यारी होवें जयकारा है ।
सुरपति उत्सव कीना अद्भुत नजारा है, त्रिभुवन की भोभा न्यारी होवें जयकारा है ।
भावना के... भावना के रंग सजी सारी नगरियों ।
आनंद रस की छलके है गागरियों ॥

रत्नत्रय भोभित, प्रभुजी सुहावना, जिनशासन की होगी मंगल प्रभावना ।
रत्नत्रय भोभित, प्रभुजी सुहावना, जिनशासन की होगी मंगल प्रभावना ।
ज्ञानस्वभावी...ज्ञानस्वभावी आतम मेरे मन भा गया ।
निज कल्याण का अवसर आ गया ॥

सूची

गाजती बाजती आई प्रतिष्ठा आंगड में आज हमार रे... आया पंचकल्याणक
गाजती बाजती आई प्रतिष्ठा आंगड में आज हमार रे... आया पंचकल्याणक (कोरस)
मंगल महोत्सव पार्श्वकुंवर का हर्षित है वसुधा अपार रे....आया पंचकल्याणक
मंगल महोत्सव पार्श्वकुंवर का हर्षित है वसुधा अपार रे....आया पंचकल्याणक (कोरस)

अंतिम भवधारी प्रभुजी पधारे अभिनंदन करे भविजन सारे ।
अंतिम भवधारी प्रभुजी पधारे अभिनंदन करे भविजन सारे । (कोरस)
अंतिम भवधारी प्रभुजी पधारे अभिनंदन करे भविजन सारे ... हे जी रे हे
समकित गुलाल से रंग गई वसुधा हो रही प्रभु जयकार रे
मंगल महोत्सव पार्श्वकुंवर का हर्षित है वसुधा अपार रे....आया पंचकल्याणक

फास्ट बीट के साथ

गाजती बाजती आई प्रतिष्ठा आंगड में आज हमार रे... आया पंचकल्याणक
गाजती बाजती आई प्रतिष्ठा आंगड में आज हमार रे... आया पंचकल्याणक (कोरस)
मंगल महोत्सव पार्श्वकुंवर का हर्षित है वसुधा अपार रे....आया पंचकल्याणक
मंगल महोत्सव पार्श्वकुंवर का हर्षित है वसुधा अपार रे....आया पंचकल्याणक (कोरस)

सूची

माता वामा ललना जायो, तीर्थकर सुत अंगना आयो ।
यहाँ जन्मे है पारसकुमार जी हो...हो...हो यहाँ जन्मे है पारसकुमार जी
माता वामा ललना जायो, तीर्थकर सुत अंगना आयो ।
यहाँ जन्मे है पारसकुमार जी हो...हो...हो यहाँ जन्मे है पारसकुमार जी

अंतर के आनंद में ललना झूले रे ... झूले रे
अंतर के आनंद में ललना झूले रे ... झूले रे
भेद ज्ञान के फुलवा फूले रे फूले रे
भेद ज्ञान के फुलवा फूले रे हो ...हो
श्रद्धा भक्ति के हार सजाओं सखियों हों सजाओ सखियों
श्रद्धा भक्ति के हार सजाओं सखियों.....
परणति अपनी भुद्ध बनाओ, आनंद अवसर मंगल आयो ।
आज जन्मे है पारस कुमार रे

बाजत बधाई अश्वसेन की नगरियों बाजत बधाई अश्वसेन की नगरियों ।
आनंद के अमृत की छलकी गगरियों आनंद के अमृत की छलकी गगरियों ॥
माँ वामा जायो पार्श्वकुमार बधाई मिल गाओ
मिल गाओ सखी मिल गाओ रे सखी मिल गाओ रे मिल गाओ

स्वर्गपुरी से प्रभुजी पधारे... स्वर्गपुरी से प्रभुजी पधारे ।
रत्नों की वर्षा कर इन्द्र हर्षाये,.... रत्नों की वर्षा कर इन्द्र हर्षाये ॥
भोभा नगरी..भोभा नगरी की अगम अपार बधाई मिल गाओ
मिल गाओ सखी मिल गाओ रे सखी मिल गाओ रे मिल गाओ

बाजत बधाई अश्वसेन की नगरियों

सूची

बहती आनंद की धार, भव्यों के मनहार ...आये पारसकुमार
कुमार रे कुमार आये पारसकुमार... कुमार रे कुमार आये पारसकुमार
बाजे दुंदभी ताल, उड़े केशर गुलाल ... आये पारसकुमार
कुमार रे कुमार आये पारसकुमार... कुमार रे कुमार आये पारसकुमार

पावन हो गई वसुधा पारस के नाम से हो ...हो
कण कण हर्षित होकर करे जयगान रे ... हो ... हो
पुलकित परणति नृत्य कर रही गावें मंगलाचार ।

बहती आनंद की धार, भव्यों के मनहार आये पारसकुमार

निज कल्याण के हेतु कल्याणक मंगलमय सुखकार रे ।
निज प्रभुता को जान स्वयं जिय होता भव से पार रे ॥
होता भव से पार रे ...
प्रभु दर्शन का भाव समझना निज दर्शन का ये हेतु ।
जो प्रभु सम निज रूप निरखते उनको मुक्ति का सेतु ॥

हे गाओ रे आज मंगलकार रे जय जय प्रभु की जय जय
मुक्ति का मिला अब मार्ग ... चालो रे
हे गाओ रे आज मंगलकार रे जय जय प्रभु की जय जय
मुक्ति का मिला अब मार्ग ... चालो रे

सूची

ये महामहोत्सव मंगलमय सुहावना.....२
निर्दोश जिनशासन की हो प्रभावना २

अद्भुत स्वप्न सोलह माता ने देखे, आनंदकारी फल नृप उल्लेखे ।
अंतिम भवधारी सुत गर्भ में आया, पुण्यफला नाथ त्रिभुवन ने पाया ॥
ये गर्भ कल्याणक अतिपावन मनभावना.....

प्रभु जनम की मंगल घड़ी आई, तिहुलोक छाई खुशियों बाजे भाहनाई ।
निरखत छवि प्रभु इन्द्र हर्षाये, पांडुकशिला पर मंगल न्हवन रचाये ॥
अंतर आनंद में झूल रहे प्रभु पालना.....

उपशम रस धारा प्रभु मनमांहि, विशयन में मन रीझत नांहि ।
प्रभुजी वेश दिगम्बर धारें, राग से भिन्न निज ज्ञायक निहारें ॥
वैराग्य जननी भाये प्रभु वर भावना.....

समवशरण भोभित श्री जिनराया, वस्तु स्वरूप प्रभु वाणी में आया ।
लोकालोक झलके प्रभु ज्ञान मांहि, निजरस लीन भोगें आनंद सदाहि ॥
भाश्वत पद तुम सम प्रगटाऊँ है कामना.....

अशरीरी सिद्ध दशा क्षण में प्रगटाई, भव्यों के आदर्श सिद्ध जिनराई ।
ज्ञायक स्वभाव भव्य तुम सम निहारे, निजस्वरूप भव्य तुम सम निहारे ॥
न रहे कामना अब कोई यह कामना

सूची

मंगल ये अवसर आंगण आयो जी, प्रभुजी आयेगें हमारी नगरी २
भावों की चुनर ओढ आई भाची, सौधर्म आये बडौदा नगरी २

हर्षित है वसुधा सारी खुशियों अपार है ।
भक्ति में झूम रहा इन्द्र परिवार है ।
सुरपति उत्सव कीना, भाचि गीत गाये ।
मंगलकारी प्रभु महोत्सव मनायें
श्रद्धा सुमनों से सजी गई सिद्धपुरी.....
प्रभुजी आयेगें हमारी नगरी (कोरस)

रोम रोम हर्षे है प्रभु आगमन से
पुष्प रतन वर्षा सुरपति करते ।
भक्ति के रंग डूबे देखो नर नार है ।
गूंज उठा नभ सारा प्रभु जयकार से
आनंद अमृत की छलक रही गगरी
प्रभुजी आयेगें हमारी नगरी (कोरस)

आत्मीय आमंत्रण मधुवन से आया ।
भावी सिद्धों को सिद्ध प्रभु ने बुलाया ॥
निज प्रभुता को लख प्रभु बन जाओ ।
तज मोह निद्रा चेतन अब जाग जाओ ॥
पुण्यों के फल में पाई भुभ ये घड़ी ...
प्रभुजी आयेगें हमारी नगरी (कोरस)

सूची

रचयिता - डॉ. विवेक जैन, छिंदवाडा